यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2024

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 12 आगम

अंक 100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

प्रश्न 1. निम्न गाथाओं का भावार्थ लिखो- **10x2=20**

1. ''जम्मं दुक्स्त्रं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य
अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो''

भावार्थ .....

.....

2. ''निच्चकालऽप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं
भासियव्वं हियं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं''

भावार्थ .....

.....

3. ''आगासे गंगसोउव्व पडिसोओ व्व दुत्तरो
वाहाहिं सागरो चेव तरियव्वों गुणोयही''

भावार्थ .....

.....

4. ''तं वितं डम्मापियरो एवमेयं जहा फुडं
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किंचि वि दुक्करं''

भावार्थ .....

.....

5. ''एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं

ममत्तं छिंदई ताहे महानागो व्व कंचुयं''

भावार्थ .....

.....

6. ''गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ।

जसत्थजोग-पडिवन्ने य णं अणगारे अणन्तघइपज्जवे स्त्रवेइ।

भावार्थ .....

.....

7. ''पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

पच्चक्स्त्राणेणं आसवदाराइं निरूम्भइ''

भावार्थ .....

.....

8. ''परियट्टणए णं भंते! जीवे किं जणयइ?

परियट्टणाए णं वंजणइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ''

भावार्थ .....

.....

9. '' वेयावच्चेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

वेयावच्चेण तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबंधइ''

भावार्थ .....

.....

10. '' वीयरागयाए णं नेहाणुबंधणाणि, तण्हाणुबंधणाणी य वोच्छिंदय।

मग्गुन्नेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु सचितचित-मीसएसु चेव विरज्जइ।

भावार्थ .....

.....

प्रश्न 2. निम्न सुक्तियों के भावार्थ लिखो- **10x2=20**

1. ''योगक्क्रता विसंवादनं चाशुभस्यनाम्नः''

भावार्थ .....

2. ''परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणाच्दादनोदभावने च नीचैर्गोत्रस्य''

भावार्थ .....

3. ''मारणान्तिकीं संलेखनां जोषिता''

भावार्थ .....

4. '' जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुस्त्रानुबंधनिदानकरणानि''

भावार्थ .....

5. '' प्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशास्तद्विधयः''

भावार्थ .....

6. '' त्रायस्त्रिंशतसागरोपमाण्यायुष्कस्य''

भावार्थ .....

7. '' मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः''

भावार्थ .....

8. ''सूक्ष्मसंपरायच्छदमस्थवीतरागयोश्चतुर्दश''

भावार्थ .....

9. ''संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपातस्थानावकल्पतः साध्याः''

भावार्थ .....

10. ''मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्ष्याच्चकेवलम्''

भावार्थ .....

प्रश्न 3. निम्न भावो को प्रकट करने वाली गाथा लिखे- **10x1=10**

1. विषयों रे विरक्त और संयम में अनुरक्त मृगापुत्र ने माता-पिता के पास आकर इस प्रकार कहा-

.....

2. मेरे शरीर को चूर-चूर करने वाले मुदगरो से, मुसंढियो से, त्रिशूलो से और मूसलो से निशान होकर मैने अनन्त बार दुख पाया है।

.....

3. हे पिता! मनुष्यलोक में जैसी वेदनाएँ देखी जाती है, उनसे अनन्तगुणी अधिक दुःखमयी वेदनाएँ नरको में होती है।

.....

4. जब महावन में मृग के शरीर में आतंक उत्पन्न होता है, तब वृक्ष के नीचे बैठे हुए उस मृग की कौन चिकित्सा करता है?

.....

5. इस प्रकार मृगापुत्र अनेक प्रकार से माता-पिता को अनुमति के लिए मना कर उनके ममत्व को त्याग देता है, जैसे कि महानगा केंचुली का परित्याग कर देता है।

.....

6. निन्दना से पश्चात्ताप होता है। पश्चात्ताप से विरक्त होता हुआ व्यक्ति करणगुणश्रेणि को प्राप्त होता है। करणगुणश्रेणि-प्रतिपन्न अनगार मोहनीय कर्म का क्षय करता है।

.....

7. प्रतिपृच्छना से जीव सूत्र अर्थ और तदुभय को विशुद्ध कर लेता है तथा कांक्षामोहनीय को विच्छिन्न कर देता है।

.....

8. तप से जीव व्यवदान-विशुद्धि प्राप्त करता है।

.....

9. कषाय के प्रत्याख्यान से वीतराग भाव प्राप्त होता है। वीतराग भाव को प्राप्त जीव सुख-दुःख में समभावी हो जाता है।

.....

10. योगसत्य से जीव योगो को विशुद्ध कर लेता है।

.....

प्रश्न 4. निम्न गाथाओं को पूर्ण करो- **10x1=10**

1. ..... शुभस्य ..... संपन्नता।

2. तत्स्थैर्यार्थं ..... पञ्च।

3. मिथ्यादर्श ..... बंधहेतवः।

4. स गुप्ति ..... चारित्रैः।

5. कृत्स्नकर्मक्षयो .....

6. इमं .....

..... भायणं।

7. तालणा .....

..... अलाभया।

8. मिगचारियं .....

..... तओ।

9. धम्मसद्धाए .....

..... विरज्जइ।

10. तओ पच्छा .....

..... वितिमिरं।

प्रश्न 5. निम्न गाथाओं का भावार्थ लिखो- **15x1=15**

1. आश्रव के अधिकरण कौन-कौन है।

.....

2. अशुभ नाम कर्म के बंध हेतु कौन से है।

.....

3. पुण्य रूप प्रकृतियाँ कितनी है कौन सी।

.....

4. गुप्ति किसे कहता है।

.....

5. केवली को कौन से शुल्क ध्यान होते है।

.....

6. मृगा पुत्र को कौन सा ज्ञान उत्पन्न हुआ।

.....

7. क्या स्वाद रहित है। किसे तैरना-पार करना दुष्कर है।

.....

8. नरक की वेदना का वर्णन करते हुये कौन-कौन से पशु-पक्षियों का उदाहरण दिया गया है नाम लिखो कोई चार

.....

9. मृगा पुत्र किसके समान अपने ममत्व को त्याग देता है।

.....

10. मृगापुत्र ने कितने मास का अनशन किया और कहाँ गये।

.....

11. निर्वेद से जीव क्या प्राप्त करता है।

.....

12. किससे माया निदान मिथ्या दर्शन शल्य को निकाल देता है।

.....

13. किसमें मग्न होकर सुख पुर्वक विचरण करता है।

.....

14. स्वाध्याय से जीव क्या क्षय करता है।

.....

15. जब तक जीव सयोगी रहता है तब तक कौन से कर्म बांधता है।

.....

प्रश्न 6. रिक्त स्थान की पुर्ति करो- **15x1=15**

1. सपूर्ण रूप से इन शरीरो से रहित होकर वह ..... को प्राप्त होता है।
2. चारित्र सम्पन्नता से ..... भाव को प्राप्त कर लेता है।
3. ..... करके संसार मार्ग का विच्छेद करता है।
4. ..... से जीव सब भावों को जानता है।
5. जब .....परिमित आयु शेष रहती है तब अनगार .... में प्रवृत होता है।
6. निर्वाण गुणो को प्राप्त कराने वाली ..... को धारण करो।
7. ..... को तराजु से तोलना दुष्कर है।
8. भिक्षु का ..... गुण धारण करने पड़ते है।
9. ..... दुखो एवं क्लेशो का भाजन है।
10. ..... फल का परिणाम सुंदर नहीं होता है।
11. सम्पूर्ण कर्मो का क्षय होना ..... है।
12. ..... मनोक्षानाम्।
13. ..... के सम्बंध से जीव कर्म के योग्य पुद्गलो को ग्रहण करता है।
14. ..... संवरः
15. ततश्च .....

प्रश्न 7. सही जोड़ी बनाओ- **10x1=10**

1. नम्रवृति	A) ऋजुता
2. सव्व-दव्वेसु विणीय-तव्हे सीइभूए	B) वैमानिक देव
3. परिग्रह का त्याग	C) उच्च गोत्र
4. मग्गं च मग्ग फलं च विसोहेए	D) करणगुण श्रेणि
5. निन्दना	E) अतिदुष्कर
6. आयुष वज्जाओ सतकम्म पगडीओ	F) सज्झाएणं भंते
7. वोधि के लाभ	G) धम्म कहाएणं भंते
8. आगमेसस्स-भद्दताए कम्मं निबधई	H) पच्चक्खाणेणं भंते
9. माय विजय	I) अणुप्पेहाए णं भंते
10. तित्थधमं अवलबं माणे महानिज्जरे	J) पायच्छित्तकरणे णं भंते
	k) वायणाए णं भंते